# स्वतंत्रता के पश्चात् भारत-नेपाल सम्बन्ध : एक विवेचनात्मक दृष्टि

**बीज शब्द :** नेपाल की भौगोलिक सीमाएँ पड़ोसी देशों से सन्धि की स्थिति, नेपाल में राजशाही के समाप्त होने के बाद के भारत से संबंध।

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

*सांस्कृतिक पृष्ठभूमि समान होने से भारत-नेपाल संबंध मधुर रहे हैं। राजतंत्र की समाप्ति के बाद नेपाल की राजनैतिक दशा बदलने से इन संबंधो की दिशा- दशा बदली है। प्रस्तुत शोध आलेख इससे जुड़े तथ्यों को उद्घाटित करता है।*

**विजय कुमार**
**प्रोजेक्ट फैलो,**
**मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट,**
**सैन्य विज्ञान विभाग,**
**एल० एस० एम० राज० स्ना० महा वि०**
**पिथौरागढ़।**

नेपाल हिमालय की उपत्यकाओं के मध्य बसा हुआ एक छोटा-सा देश है। यह भारत और तिब्बत के बीच स्थित है और अब तिब्बत पर चीन के आधिपत्य के बाद भारत व चीन के बीच बफर स्टेट का कार्य करता है। यह विश्व का एकमात्र हिन्दू राष्ट्र रहा है। इसकी राजधानी काठमांडू है, इस राष्ट्र का क्षेत्रफल 1,47,181 वर्ग किमी0 है, जहाँ 2,35,01,000 जनसंख्या निवास करती है, यहाँ नेपाली भाषा बोली जाती है। यहाँ कुछ प्रमुख नदियाँ- कर्नाली, गंडक, कोसी आदि प्रवाहित होती हैं। यहाँ पर लकड़ी काटना, डेरी, पशुपालन, घी, मक्खन, पनीर, ऊन, चमड़ा, पटसन, कपड़े की मिलें, चीनी, कागज व सिगरेट आदि के कारखाने हैं, ये ही यहाँ के व्यवसाय एवं उद्योग हैं। धर्म की दृष्टि से देखा जाये तो यह हिन्दू राष्ट्र रहा है, किन्तु यहाँ बौद्ध व मुस्लिम जाति के लोग भी निवास करते हैं। यहाँ के प्रमुख शहर -काठमांडू, विराटनगर, पोखरा, बीरगंज, नेपालगंज, भैरहवा हैं।

**स्थिति-**

बहादुर गोरखों का देश नेपाल भारत की उत्तरी सीमा के साथ हिमालय की गोद में स्थित है। ऐतिहासिक काल से ही भारत का नेपाल के साथ मित्रता के सम्बन्ध हैं। हिमालय के उस पार तिब्बत प्रदेश है। नेपाल के दक्षिण और पश्चिम में भारत के बिहार, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड तथा पूर्व में सिक्किम और पश्चिम बंगाल प्रान्त है।

महान हिमालय अथवा हिमाद्रि श्रेणी, यहाँ संसार की सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट (8850 मी0) तथा अन्य कई चोटियाँ प्राय: वर्ष भर बर्फ से ढकी रहती हैं, जिनसे कई नदियाँ निकल कर नेपाल के मैदानों को सींचते हुए भारत के उत्तरी भाग में अपना पानी लाती हैं।

नेपाल का तराई वाला क्षेत्र मात्र 300 मी0 की ऊँचाई पर है तथा यहाँ अधिकांश भाग घने जंगलों और लम्बी-लम्बी घास से ढके हुए हैं। यहाँ हाथी, चीते, रीछ आदि जन्तु रहते हैं।

**जलवायु-**

हिमालय की ऊँची पहाड़ियों पर कड़ाके की बर्फानी ठण्ड पड़ती है। जबकि मैदानी क्षेत्रों में गर्मियों में सामान्य गर्मी होती है। काठमाण्डू का तापमान 20 सेन्टीग्रेट से 30 सेन्टीग्रेट के बीच रहता है। दुनिया के आखिरी हिन्दू राजा ज्ञानेन्द्र का ताज मई 2008 उस समय छिन गया जब संविधान सभा ने औपचारिक रूप से 240 साल पुरानी राजशाही को समाप्त करने के लिए मतदान किया था और उन्हें एक सामान्य नागरिक में तब्दील कर दिया।[1] यह नेपाल में एक बहुत बड़ा राजनीति परिवर्तन था (अब तक

का)। इतिहास साक्षी है कि आधुनिक नेपाल के जनक महाराजा पृथ्वी नारायण शाह जिन्होंने 1769 में तत्कालीन नेपाल की सभी प्रमुख रियासतों को विजित कर एक सुदृढ़ और एकीकृत नेपाल की स्थापना की थी। वे चित्तौड़गढ़ (भारत) के सिसोदिया वंश से सम्बन्धित थे।[2]

भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के प्रसार के क्रम में ईस्ट इण्डिया कम्पनी और नेपाल के बीच एक संघर्ष हुआ। अंग्रेजों ने नेपाल को हराकर 1816ई0 में उस पर सुगौली की संधि आरोपित कर दी। इस सन्धि के अनुसार नेपाल को अपने भू-भाग के कुछ हिस्सों को ईस्ट इण्डिया कम्पनी को देना पड़ा। काठमाण्डू में एक ब्रिटिश रेजीडेन्ट रहने लगा और नेपाल पूर्ण रूपेण अंग्रेजों के प्रभाव में आ गया। नेपाल के आंतरिक मामलों में ब्रिटिश सरकार ने हस्तक्षेप नहीं किया। वहाँ राजाओं का निरंकुश शासन चलता रहा।

भारत व नेपाल के बीच 186 किमी0 की खुली सीमा है, जहाँ पर लोगों और सामान की बिना किसी रोक-टोक के मुक्त आवाजाही है। साथ ही नेपाल में भारतीय रूपये को वैधानिक मान्यता है। नेपाल का 60 प्रतिशत से अधिक सार्वभौमिक व्यापार भारत में केन्द्रित है तथा देश में लगभग आधा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भारत से होता है। एक देश की घटनायें कई प्रकार से दूसरे देश को प्रभावित करती हैं। नेपाल के आधुनिक निर्माता पृथ्वीनारायण शाह ने नेपाल की विदेश नीति का निर्धारण करते हुए कहा, ''यह देश दो चट्टानों के बीच खिले हुए फूल के समान है। हमें चीनी सम्राट के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध रखने चाहियें तथा हमारे सम्बन्ध दक्षिणी सागरों के सम्राट से भी मधुर होने चाहियें पर वह बहुत चालाक है।'' नेपाल की भौगोलिक स्थिति ने धर्म, जाति, संस्कृति, समाज, परम्परा व आर्थिक हित आदि को आपस में इतना घुला-मिला दिया है कि नेपाल का दक्षिणी भाग, यानि तराई और उत्तरी भारत एक ही समान प्रतीत होते हैं। इतनी समीपता दो प्रभुसत्ता वाले देशों में कठिनाई से ही देखने को मिलेगी।[3]

**स्वतन्त्र भारत व नेपाल-**

निकटतम पड़ोसी होने के नाते नेपाल में भारत की रुचि स्वाभाविक है। स्वतंत्र भारत के सामने जो नई विश्वस्तरीय स्थिति उत्पन्न हुई उसने नेपाल में भारत की रूचि को और बढ़ा दिया। 1947 में नेपाल के प्रधानमंत्री ने भारत सरकार से एक ऐसे व्यक्ति की मांग की जो नेपाल का संविधान बनाने में नेपाल सरकार को सलाह-मशविरा दे सके। भारत यह मानता था कि बाह्य विश्व में हो रहे राजनीतिक परिवर्तनों का देर-सवेर नेपाल पर भी प्रभाव पड़ना अवश्यम्भावी है, इसलिए अच्छा है कि नेपाल शनैः-शनैः प्रतिनिध्यात्मक व उत्तरदायी राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना के लक्ष्य को प्राप्त करे।

नेपाल की मदद के लिए भारत सरकार ने एक वरिष्ठ भारतीय राजनीतिज्ञ श्री श्रीप्रकाश को नेपाल भेजा। उनकी सहायता से नेपाल के लिए एक प्रारूप तैयार हुआ, लेकिन चूँकि इस संविधान से राणाशाही की निरंकुशता का अन्त हो रहा था, इसलिए राणाओं ने इसे कार्यान्वित नहीं होने दिया।

नेपाल में दृढ़ता लाने के लिए राजनैतिक दृष्टि से यह महत्वपूर्ण हो गया कि नेपाल में जो पुरानी सामन्तशाही चल रही थी उसका अन्त कर एक लोकतान्त्रिक व्यवस्था स्थापित हो। इस कार्य को अन्जाम देने हेतु नेपाली कांग्रेस के नेता काफी समय से सक्रिय थे और भारत सरकार उसके साथ सहानुभूति रखती थी। नेपाल व भारत के बीच ब्रिटिश काल में जो सन्धि हुई थी उसे भारत सरकार स्वयं नहीं मान सकती थी क्योंकि उसमें साम्राज्यवाद की बू थी।

अतः भारतीय सरकार एक नये सिरे से नेपाल के साथ एक सन्धि करना चाहती थी। 1949 के उत्तरार्ध में भारत सरकार ने नयी सन्धि करने हेतु नेपाल के कूटनीतिज्ञ अधिकारियों के साथ वार्ता आरम्भ की, किन्तु नेपाल सरकार इसको टालती रही। नवम्बर 1949 में नेपाल के प्रधानमन्त्री अपने पुत्र सहित और नेपाल सरकार के विदेश विभाग के महानिदेशक ने भारत की यात्रा की तथा जवाहरलाल नेहरू जो उस समय भारत के प्रधानमंत्री थे, से प्रस्तावित सन्धि के बारे में विचार-विनिमय किया। इसी वार्ता के आधार पर एक मशविरा तैयार किया गया और इसे नेपाल भेज दिया गया। भारत व नेपाल सरकार के बीच विचार-विनिमय चलता रहा, परन्तु कोई अन्तिम निष्कर्ष नहीं निकला।

इस प्रकार चीन के गृह युद्ध का फैसला अन्तिम रूप से हो गया। चीन में कम्युनिस्ट शासन स्थापित होने का कारण कोमिन्तांग की पराजय होना था। ऐसी परिस्थिति में भारत सरकार ने अपनी उत्तरी सीमा पर स्थित राज्यों के साथ नये सम्बन्ध स्थापित करने की ओर विशेष ध्यान दिया। सिक्किम व भूटान के साथ उसने 1949-50 में नई सन्धियाँ स्थापित कीं, किन्तु नेपाल की स्थिति सिक्किम व भूटान से बिल्कुल भिन्न थी, क्योंकि नेपाल भारत का संरक्षित राज्य न होकर एक स्वतंत्र देश था। लार्ड कर्जन ने एक बार कहा था कि, ''यदि कभी रूस ने तिब्बत पर आधिपत्य जमा लिया तो फिर उसकी निगाह नेपाल पर होगी। अतः नेपाल की अपेक्षा तिब्बत को अंतःस्थ राज्य बनाया जाना चाहिये।''

अतएव कुछ समय तक भारत सरकार के इरादों के बारे में नेपाल सरकार अत्यन्त शंकालु (शंका में) रही। भारत सरकार ने नेपाल के प्रधानमंत्री को भ्रमण के लिए आमन्त्रित किया और फरवरी 1950 में वे भारत-यात्रा पर आये। प्रस्तावित सन्धि पर पुनः बातचीत शुरू हुई। सन्धि के लिए भारत की एक

महत्वपूर्ण शर्त यह थी कि नेपाल में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली स्थापित हो। राणा को यह बात बिल्कुल पसन्द नहीं आयी। इधर मोहन शमशेर जंग बहादुर को यह विश्वास हो गया कि पाकिस्तान और साम्यवादी चीन के विरुद्ध अपनी सुरक्षा को सुदृढ़ करने के लिए भारत नेपाल की सहायता का प्रबल इच्छुक है। उनका जो शानदार स्वागत भारत में हुआ उससे यह धारणा और प्रबल हो गयी। इसका फल यह हुआ कि उसने भारत के साथ अधिक से अधिक सौदेबाजी की नीति अपनायी। ऐसे हालात में प्रस्तावित नेपाल-भारत सन्धि के बारे में पुन: कोई अन्तिम निर्णय नहीं हो सका।

उत्तर की ओर हिमालय के राज्य अंग्रेजों की सीमावर्ती नीति के अन्तर्गत आते थे। इस ओर ब्रिटिश शासकों को सबसे बड़ा भय तिब्बत पर रूसी आधिपत्य का था। इधर तिब्बत के सम्बन्ध में कम्युनिस्ट चीन की नीति दिनोंदिन उग्रतर होती जा रही थी। चीन की नई सरकार ने ''साम्राज्यवादी शिकंजे से तिब्बत को मुक्त करने'' का अपना इरादा व्यक्त कर दिया था और इसके लिए सैनिक तैयारी भी शुरू हो गयी थी। यही कारण था कि भारत सरकार अत्यन्त बैचेन थी। नेपाल की सुरक्षा के बारे में भी इसको लेकर उसकी चिन्ता बढ़ गयी थी। इस सन्दर्भ में भारत नेपाल के सम्बन्धों के बारे में 17 मार्च 1950 को भारतीय संसद में पण्डित नेहरू ने एक महत्वपूर्ण वक्तव्य दिया और कहा, ''जहाँ कुछ एशियाई गतिविधियों का प्रश्न है, भारत और नेपाल के बीच कोई सैनिक समझौता नहीं है, लेकिन भारत सरकार द्वारा किसी भी ओर से नेपाल पर आक्रमण होना सहन करना सम्भव नहीं है। नेपाल पर सम्भावित कोई भी आक्रमण अवश्यम्भावी रूप से भारत की सुरक्षा के लिए खतरा होगा।''[4]

जनरल विजय शमशेर और एन0एम0 दीक्षित ने पुन: भारत की यात्रा अप्रैल 1950 में की। प्रस्तावित सन्धि के बारे में इस बार विस्तारपूर्वक वार्ता हुई। दीर्घकाल तक वार्ता चलने के बाद 30 जुलाई 1950 को दोनों देशों के बीच एक सन्धि सम्पन्न हुई, लेकिन इस बीच नेपाल में घट रही घटनाओं के कारण भारत सरकार व राणा सरकार के बीच सम्बन्धों में तनाव उत्पन्न हो गया।

1998 में महाकाली सन्धि की पुन:व्याख्या कर शारदा बैराज तथा टनकपुर बैराज की स्थिति की समीक्षा की, 2008 में नेपाल में राजा का पद समाप्त हो गया व नेपाल लोकतांत्रिक गणराज्य बना, 16 फरवरी 2010 को नेपाल के राष्ट्रपति डॉ0 रामबरन यादव की भारत यात्रा हुई तथा दोनों देशों के मध्य रेल नेटवर्क पर समझौता भी हुआ,[5] 10 फरवरी 2014 को नेपाली कांग्रेस के नेता सुशील कोइराला को नेपाल का नया प्रधानमंत्री चुना गया। 601 सदस्यीय संविधान सभा में उन्हें 405 मत प्राप्त हुए।[6] और अभी सार्क का 18 वाँ शिखर सम्मेलन जो नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में 26-27 नवम्बर 2014 को आयोजित हुआ, में काठमाण्डू और दिल्ली से सीधी बस सेवा शुरु करने हेतु भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और नेपाली पीएम सुशील कोइराला ने हरी झंडी दिखाकर विधिवत शुरुआत की, व साथ ही मोदी ने नेपाल को उन्नत और और हल्के ध्रुव मार्क-3 हेलीकॉप्टर भी दिये। जिसका इस्तेमाल नेपाल सैन्य अभियानों में कर सकेगा।[7]

उक्त समस्त वार्ताओं व समझौतों को ध्यान में रखकर यदि भारत-नेपाल के बीच के सम्बन्धों को देखा जाये तो यह दिखलायी देता है कि भारत-नेपाल सम्बन्ध लगभग काफी सीमा तक मधुर ही रहे हैं। पर समय-समय पर कुछ मतभेदों के चलते व खुली सीमा का गलत इस्तेमाल होने पर छोटी-मोटी समस्याओं के कारण मनमुटाव जन्म लेते रहते हैं, किन्तु वह समय के साथ-साथ या वार्ताओं के द्वारा हल कर लिए जाते हैं। अत: भारत-नेपाल राष्ट्र ऐसे प्रतीत होते हैं कि मानो किन्हीं दो सगे भाईयों को उनके एक ही पैतृक निवास में से अलग-अलग हिस्से कर दिये गये हों, किन्तु अब भी आपस में हैं भाई-भाई।

सन्दर्भ:-


1. राष्ट्रीय सहारा, नई दिल्ली, 12 जून 2008.
2. चतुर्वेदी एस0के0, भारत-नेपाल सम्बन्ध, डी0 के0 पब्लिशर्स, न्यू दिल्ली, 1983.
3. झा, एस0 के0, आन ईजी पार्टनर्स, इण्डिया एण्ड नेपाल इन दि पोस्ट कालोनिपल इरा, मानस पब्लिकेशन्स, न्यू दिल्ली, 1975, पृ0 01, ।
4. धर्मदासानी, एम0डी0, ''इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी'', इन्डियन डिप्लोमैसी इन नेपाल, आलेख जयपुर 1975 से उद्धृत, जवाहरलाल नेहरू।
5. शरण, हरी व सिन्हा हर्ष कुमार, आंतरिक सुरक्षा विचार, विमर्श और विकल्प-2012, प्रत्युष पब्लिकेशन्स, दिल्ली। पृष्ठ-347-348
6. अरिहन्त समसामयिकी महासागर, करेण्ट अफेयर्स रिफ्रेशर 2014, पृष्ठ 06।
7. अमर उजाला, नैनीताल, बुधवार, 26 नवंबर 2014। पृष्ठ 18,


◆◆◆

**संगोष्ठियों में शोध प्रपत्र का वाचन शोधार्थियों एवं शोधविदों के लिए एक महत्त्वपूर्ण अवसर है। अपने गुणवत्तापरक शोध कार्य को इन संगोष्ठियों के माध्यम से जनमन के बीच लाएँ।**